मां चिन्तपुरनी चालीसा

॥ दोहा ॥

छिन्नमस्तिका मां मेरी, वंदन करो स्वीकार ।
चिन्ता हर लो दास की, दे संतोष धन अपार ॥
मङ्गल करो सर्वमङ्गला, हे मां क्रिपानिधान ।
दीन, हीन हूं शरण में, करो सर्व विधि कल्याण ॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो सुखकरनी माता ।
भाग्य संवारो भाग्यविधाता ॥ १ ॥
जय जय जय मां चिन्तापुरनी ।
विघ्न विनाशक मां सुखकरनी ॥ २ ॥
पूजन आपका परम फलदायक ।
ऋधी सिद्धी व सुखदायक ॥ ३ ॥
मनमन्दिर में करो बसेरा ।
हर पल पाऊं मां दर्शन तेरा ॥ ४ ॥
मम्तामयी आंचल ओढ़ाना ।
रोग संताप मां दूर भगाना ॥ ५ ॥
चौसठ योगिनी मङ्गल गावे ।
स्तुतिगान कर शीश निवावे ॥ ६ ॥
तुम्हरी महिमा अगम अपारा ।
शीश निवाये जगत है सारा ॥ ७ ॥
एकाग्रचित्त जो होय समर्पित ।
सब सुख करती, मां हो अर्पित ॥ ८ ॥
कर में खप्पर, खण्डे वाली ।
आप सा न कोई, मां बलशाली ॥ ९ ॥
अपनी दया बनाये रखना ।
सेवाभाव जगाये रखना ॥ १० ॥
भक्ति में मन-चित्त लगाऊं ।
मुक्ति की युक्ति यूं पाऊं ॥ ११ ॥
भगतन पे हो दया की सागर ।
भर देना मां ज्ञान की गागर ॥ १२ ॥
अवगुण पे मां ध्यान न धरना ।
असंभव को भी संभव करना ॥ १३ ॥
मैं याचक तू सुख प्रदायिनी ।
कल्याण करो मां हे कल्याणी ॥ १४ ॥
जगजननी मां पालनकरनी ।
दया द्रिष्टी सदा ही करनी ॥ १५ ॥
हरो अमङ्गल मङ्गल कर दो ।
वर्दानों की मां वर्षा कर दो ॥ १६ ॥
संतोष का दीजो मोहे दान मां ।
बल-बुद्धी मैं पाऊं ज्ञान मां ॥ १७ ॥
दिव्य आलौकिक रूप तिहारा ।
भव सागर से तारनहारा ॥ १८ ॥
सौभग्या, आरोग्या दान में देना ।
सुख-सुविधा वर्दान में देना ॥ १९ ॥
दानव दलिनी, भयमोचिनी ।
हे दुःखभंजन, पिण्डी रूपिणी ॥ २० ॥
आपके हाथ मेरे लाभ व हानी ।
कल्याण करो मां हे कल्याणी ॥ २१ ॥
हाथ जोड़ कर करूं मैं वंदन ।
जीवन में हो मां कभी न क्रंदन ॥ २२ ॥
विनती पे सदा ध्यान मां धर्ना ।
कारज सकल संपूर्ण कर्ना ॥ २३ ॥
आप की क्रिपा जो है पाता ।
निर्बल से वह सबल हो जाता ॥ २४ ॥
पिण्डी रूपिणी, भय नाशिनी ।
हरो मां चिन्ता, पर्वत वासिनी ॥ २५ ॥
सुमिरिन करे भाव से जोई ।
जन्म मरण से छूटे सोई ॥ २६ ॥
आप तो नाना रूप धारिणी ।
दैत्या दलिनी मां भय संहारिणी ॥ २७ ॥
भगतन पे मां जब हर्षाती ।
यश, कीर्ति मां फैलाती ॥ २८ ॥
जब हो विपद ने मुझको घेरा ।
चिंतामुक्त करो मन मेरा ॥ २९ ॥
निर्मल मन जो करे पर्णाम ।
सुख-सुविधा का देती हो दान ॥ ३० ॥
माई दास मां शरण में आया ।
मान-सम्मान व वैभव पाया ॥ ३१ ॥

श्रद्धा सहित जो नाम ध्यावै ।
पाप संताप निकट नहीं आवै ॥ ३२ ॥
याद करूं, तब हीं मां आना ।
संकट मोचन, मां बन जाना ॥ ३३ ॥
विनती पे मेरी ध्यान मां धर्ना ।
हर विधि काज संपूर्ण करना ॥ ३४ ॥
सर्व सुखों की आप तो दाता ।
दुष्ट आप से भय को पाता ॥ ३५ ॥
दुविधा में सुविधा बन जाती ।
आपकी दया है सुख प्रदाती ॥ ३६ ॥
श्रद्धा सहित जो पूजन करते ।
दुःख दरिद्र तन से झरते ॥ ३७ ॥
असंभव को मां संभव करती ।
वर्दानों से मां झोली भरती ॥ ३८ ॥
पढ़ै चालीसा जो चित्त लाय ।
परम सौभग्या, नवनिधि पाय ॥ ३९ ॥
बुरी आत्मा नहीं है सताती ।
"शौंकी" कवच है मां बन जाती ॥ ४० ॥

दोहा

पिण्डी रूपिणी मां मेरी, सर्वकला संपन्न ।
शरणागत हूं द्वार पे, होना मां प्रसन्न ॥

नवदुर्गे स्तुती

नमो नमो नवदुर्गे जय जय, नमो नमो नवदुर्गे जय ।
संकटहरनी, मङ्गलकरनी, सदा हो तेरी जय ॥
नमो नमो ...
शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, हे कूष्माण्डा माता ।
तेरा तो है भगतजनों से, हर पल मैया नाता ॥
जिस संग तेरी क्रिपा रहती, रहता वह निर्भय ।
नमो नमो ...
चन्द्रघंटा, कात्ययनी मां, कालरात्रि, महागौरी ।
प्रेम-सुधा बरसाओ मुझपे, दुविधा हर दो मेरी ॥
ममताभाव विखेर के मां, पल दे दो सुखमय ।
नमो नमो ...
ऋधी, सिद्धी देना मैया, संकद जननी, सिद्धदात्री ।
वरदायिनी, ज्ञानदायिनी, काटो दुःख की रात्रि ॥
"शौंकी" जिसे सहारा मां दे, मां होता वह अजेय ॥
नमो नमो ...

आरती चिन्तपूर्णी देवी जी की

चिन्तपूर्णी चिन्ता दूर करनी,
जन को तारो भोली मां ।
काली दा पुत्र पवन दा घोड़ा,
सिंह पर भई असवार भोली मां ॥ १ ॥
एक हाथ खड़ग दूजे में खंडा,
तीजे त्रिशूल संभाले, भोली मां ॥ २ ॥
चौथे हाथ चक्कर, गदा पांचवें,
छठे मुण्डों दी माल, भोली मां ॥ ३ ॥
सातवें से रूण्ड-मुण्ड विदारे,
आठवें से असुर संहारे, भोली मां ॥ ४ ॥
चम्पे का बाग लगा आति सुन्दर,
बैठी दीवान लगाय भोली मां ॥ ५ ॥
हरि हर ब्रह्मा तेरे भवन विराजे,
लाल चंदोया बैठी तान, भोली मां ॥ ६ ॥
औखी घाटी विकटा पैंडा,
तले बहे दरिया, भोली मां ॥ ७ ॥
सुमर चरन ध्यानू जस गावे,
भक्तां दी पेज निभाओ भोली मां ॥ ८ ॥